सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण '7 A'

Unit II: भाषिक योग्यताओं का विकास

1. श्रव्य - दृश्य एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास

a. भाषायी कौशलों का विकास
b. भाषायी कौशलों का महत्व
c. भाषा के कौशल
d. श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
e. श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग
f. भाषायी कौशल - उच्चारण या बोलने का कौशल
g. मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

2. पठन - योग्यता का विकास

a. पठन एवं वाचन शिक्षण कौशल
b. विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर
c. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर
d. वाचन शिक्षण की विधियाँ
e. वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें
f. उच्चारण के भेद

3. लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास

a. लेखन कौशल
b. लेखन शिक्षण की आवश्यकता
c. लेखन कौशल का महत्व
d. लेखन शिक्षण का समय
e. हिन्दी भाषा की लिखित शिक्षा
f. लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ
g. शुद्ध लेखन तत्व

By. Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें/सावधानियाँ

(1) पुस्तक पर बायीं ओर से प्रकाश आये तथा पुस्तक आँखों से एक फीट दूर हो।

(2) पुस्तक पर ही नजर गढ़ाये न रखें, एक बार में इतनी सामग्री ग्रहण कर लें कि मुँह उठाकर सम्मुख व्यक्ति को कुछ सिखा सकें।

(3) पढ़ने की गति न तो तेज हो, न ही मन्द हो।

(4) पाठ की शुरुआत और अन्त मन्द गति से हो जिससे बालकों को आदि व अन्त का ठीक-ठीक बोध हो जाये।

(5) वाचन के समय मेज, दीवार आदि का सहारा न लें।

Scanned with CamScanner

(6) प्रत्येक शब्द उच्चारण में आवाज स्पष्ट हो, दबी व अस्पष्ट आवाज न हो।

(7) भावानुसार ही वाचन का उतार-चढ़ाव रहे, लेकिन बात-बात पर बनावटीपन, भौंड़ा अंग संचालन, आँखें मटकाना, ठहाके मारना आदि असभ्यता का द्योतक हैं। वाचन के समय अक्षर उच्चारण, शब्द उच्चारण, बल, ध्वनि तथा स्वरारोह-अवरोह का ध्यान रखा जाना चाहिये।

(8) स्वर का उच्चारण इस प्रकार करे कि श्रोता तक आवाज पहुँच सके, प्रवाह कर्णप्रिय भी हों।

(9) अशुद्धियों को बालकों से दूर करवाने का प्रयास किया जाय।

वाचन दोषों को दूर करने की विधियाँ—वाचन में बालकों में दोष तो रह ही जाते हैं, उन्हें निम्न प्रकार से दूर कराएँ—

(1) आवृत्ति-पुनरावृत्ति—बार-बार अभ्यास कराकर ठीक-ठीक उच्चारण का अभ्यास कराना। इससे वह (बालक) अपनी कमी को दूर करने में सहायक होगा।

(2) स्थान परिवर्तन—अशुद्ध बोलने वाले बालकों को शुद्ध बोलने वाले बालकों के मध्य बैठाना चाहिये।

(3) अस्पष्टता निवारण—शीघ्रता से बोलने वाले तथा अस्पष्ट बोलने वालों को रोककर धीरे-धीरे अक्षर बोलने व स्पष्ट बोलने के लिए प्रेरित किया जाय। यह अभ्यास रोज कराया जाय।

(4) चिकित्सीय सलाह—यदि बालक शारीरिक रूप से अपंग या अंग विकार से उच्चारण ठीक न कर पाता हो तो चिकित्सीय सलाह लेकर उपचार से ठीक करवाया जाय। तालु से जीभ ऊपर न उठना, होंठ कटा होने से उच्चारण में अशुद्धता हो तो चिकित्सा द्वारा इनका इलाज सम्भव है।

(5) अध्यापक उच्चारण करके बालक को शुद्ध उच्चारण कराये—अर्थात् अध्यापक स्वयं भी शुद्ध उच्चारण करे तथा बालकों से भी सही व शुद्ध उच्चारण कराये। जिस प्रकार बाघिन अपने छोटे बच्चे को मुँह में लेकर चलती है तो ध्यान रखती है कि न तो बच्चे के दाँत चुभे तथा न ही वह मुँह से गिरे। उसी प्रकार बालक भी वर्णों का उच्चारण स्थान व शब्दों के अनुसार ठीक प्रकार से करे। बालकों के अक्षर मुँह में न रह जाएँ तथा बाहर गिरते भी नजर न आयें। उच्चारण का पूर्ण ज्ञान होना चाहिये।

Scanned with CamScanner